रात्रीक्लास ओमशांति 27.9.67

(क्लास में प्रेम बहन अनुभव सुनाय रही थी कि भल बापदादा कहते हैं आशीर्वाद वा कृपा नहीं मांगनी है ;परंतु सम्मुख आने से आटोमेटिकली आशीर्वाद मिलती ही है। इस पर बापदादा ने बोला क्या बाप की आशीर्वाद मिलती है?) बाप कहते रहते हैं मैं टीचर हूं, पढ़ाता रहता हूं। जो पढ़ेंगे वह अच्छा पद पावेंगे। बाकी मैं आशीर्वाद करुं तो सब आगे चले जाएं। (हम मांगते नहीं हैं आपे ही मिलती है) आशीर्वाद करना अक्षर रांग है ;क्योंकि आशीर्वाद से कुछ होता नहीं है। कहते हैं चिरंजीवी भव, पुत्रवान भव,धनवान भव। कहने से कुछ मिलता है क्या?बाप कहते हैं भक्तिमार्ग में जो कुछ तुम मांगते हो वह देता नहीं हूं। मैं ड्रामाअनुसार अपनी फर्ज अदाई समझ आता हूं। बाप के पास जो वर्सा है वह बच्चों को देने लिए बांधा हुआ है। देता है पढ़ाते हैं। श्रीमत पर चले तो अपने उपर आशीर्वाद कर सकते हैं। इसको कहते हैं दुःखहर्ता–सुखकर्ता। तो सभी को देना पड़े ;क्योंकि सभी बच्चे हैं। आशीर्वाद भक्तिमार्ग का अक्षर है। ज्ञान का नहीं। बच्चों को कुछ भी मालूम नहीं। बेहद का बाप क्या वर्सा देते हैं सतयुग में यह पता नहीं रहता है। यह आगे की पुरुषार्थ की प्रालब्ध मिलती है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो जैसे कि अपने उपर आशीर्वाद करते हो। टीचर पढ़ाते हैं। टीचर की मत से अपने उपर आशीर्वाद करते हैं। श्रीमत से तुम जितना उंच बनने चाहो बन सकते हो। तुम बच्चे याद रखो हम बाबा के हैं। तुम बच्चों को चित्रों पर बहुत सेवा करनी है। तुम स्वर्ग की बादशाही पाय रहे हो। दुनियां वाले अगर समझें हम नर्कवासी हैं तो अपने उपर नफरत हो जाये ;परंतु बेसमझ बुद्धि समझते नहीं। तुमको समझाना है शिवबाबा की उंच ते उंच मत है। गायन भी है प्रभु तुमरी गत–मत तुम्हीं जानो। तुम ऐसे नहीं कहेंगे। तुम जान गये हो सदगति कैसे, दुर्गति कैसे होती है। तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर बैठे हो। किसको समझाना बहुत सहज है। पूछे भारत की क्या सेवा करते हो?बोलो विश्व में शांति का राज्य स्थापन कर रहे हैं। कल्प पहले किया था। तुम बच्चों को खुशी भी रहनी चाहिए ;परंतु तुम भूल जाती हो। बाबा ने समझाया है एक दिन ढिंढोरा पीटेंगे यह विश्व में शांति का राज्य स्थापन हो रहा है। एक धर्म की स्थापना हो रही है। बाप को याद करने से राजा–रानी बनेंगे। बाप ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। बाप कितना सहज कर समझाते हैं। पर बच्चियां भूल जाती हैं। बाप को याद करो तो खुशी का पारा चढ़े। नहीं तो पारा चढ़ता ही नहीं। कुछ भी याद न रहे। इनका कुछ भी न रहा है। किसको याद करेंगे। याद की यात्रा से सतोप्रधान जरूर बनना है। हमारे लिए ही दुनियां ठहरी हुई है। तुम देखेंगे कैसे लड़ाइयां लगती हैं। अपन कहेंगे माया लड़ाती रहती है। बाप थोड़े ही बच्चों को लड़ावेंगे। बच्चों को खीरखंड होना है। क्षीर सागर के भेंट में यह है विषय सागर। ड्रामा में अत्याचार आदि का भी नूंध है। सूपनखा आदि भी अपना धंधा करेंगी। पिछाड़ी में सभी का विनाश हो जावेंगे। चित्रों के पर्दे भी बनेंगे। इनसे बहुत कशिश होगी। नालेज कोई बल नहीं है। योगबल मशहूर है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो और 84के चक्र को याद करो। ज्ञान तो बहुत सहज है। धंधा आदि भल करो ;परंतु याद को न भूलो। पैसे काम मे तो आने नहीं हैं। इसलिए बाप को याद करते चलते चलो। मूल है याद की यात्रा। तो वेस्ट टाइम न करो। देखना है किसको दुःख तो नहीं दिया। कोई आसुरी अवगुण तो नहीं है। कोई पूछे तो समझाना चाहिए प्रजापिता ब्रह्मा के तो ढेर बच्चे हैं। अपने ही तन–मन–धन से भारत की सेवा कर रहे हैं। और कोई जानते ही नहीं हैं। ज्ञान बड़ा विचित्र है। तुम्हारा यह है राजयोग। बाकी कोई खाना न खाते हैं ,पानी न पीते हैं वह हैं हठयोगी। यहां हठयोग की बात नहीं। साधारण चलना है। पहले2 तो विकारों को छोड़ना है। हीरे जैसा बनना है। क्रिमिनल आई न हो। बाकी प्याज आदि लाचारी हालत में खाना पड़ता है। देखो दृष्टि देकर खाओ। और क्या करेंगे?तुम राजयोगी हो। शरीर की सम्भाल करनी है। यह मोस्ट वैल्युएबल शरीर है। योगबल भी और कुछ सम्भाल करनी है। बाकी मांस आदि नहीं खाना है। इसके लिए तो गवर्मेंट प्रबंध कर देती है। अच्छा, मीठे2 बच्चों को गुडनाइट।